पर्यावरण अध्ययन में सामाजिक अध्ययन शिक्षण

कामिनी और पुष्पराज सिंह

पर्यावरण अध्ययन शिक्षण से अपेक्षा है कि इससे बच्चा अपने आस–पास के वातावरण को जाने, उस पर समझ बनाए, बातचीत करे और इनके बारे में अपने विचारों को गढ़ पाए व उन्हें अभिव्यक्त कर पाए। इसके जरिये हम उस बच्चे को अपने वातावरण के प्रति संवदेनशील, उसे समझने व करीब से जानने वाला इंसान बनाना चाहते हैं। साथ ही हम यह भी चाहते हैं कि बच्चा अपने आस–पास की घटनाओं को देखकर उनका विश्लेषण करने में समर्थ हो तथा सुदृढ़ तर्कों के साथ उसे प्रस्तुत भी कर पाए। इसी विषय–वस्तु पर यह आलेख केन्द्रित है।

पर्यावरण अध्ययन विज्ञान और सामाजिक अध्ययन दोनों विषयों को शामिल करके बना है। अगर हम सामाजिक अध्ययन शिक्षण के बारे में विचार करें तो हमारे सामने कुछ प्रश्न उभरते हैं:–

- सामाजिक अध्ययन सीखने से हमारा क्या मतलब है? इसमें ज्ञान और सीखने का क्या अर्थ है? सामाजिक अध्ययन सीखने और अन्य विषयों के सीखने में क्या सम्बन्ध है?
- सामाजिक अध्ययन में निहित विषयों की विषयवस्तु को किस रूप में प्रस्तुत किया जाए? जिससे वह बच्चों के स्तर के उपयुक्त होने के साथ–साथ रूचिकर भी हो, वह उन्हें मानसिक व भावनात्मक तौर पर कक्षा से जोड़े भी रखे।
- बच्चे की व उनके सीखने की प्रकृति को समझते हुए, हम किस प्रकार की कक्षाओं की रचना करें ताकि बच्चे अवधारणाओं को सीखने के साथ–साथ अपनी समझ भी विकसित कर सकें।

इन प्रश्नों पर यदि हम गम्भीरता से विचार करके अपना मत बनाएँ तो संभवतः यह सामाजिक अध्ययन शिक्षण को समझने मे फायदेमंद साबित होगा। वास्तव में विज्ञान के मुकाबले सामाजिक विज्ञान में ज्ञान के स्रोतों तक जाना मुश्किल होता है। विज्ञान मे प्रत्यक्ष घटित घटनाओं के अवलोकन, वर्गीकरण, विश्लेषण एवं प्रमाणीकरण से निष्कर्ष तक पहुंचने की संभावना है, जबकि सामाजिक विज्ञान में अधिकतर ऐसा करना संभव नहीं है। सामाजिक विज्ञान के सन्दर्भ में ज्ञान का स्वरूप समझना इसलिए भी कठिन हो जाता है, क्योंकि इसमें शामिल इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र और नागरिक शास्त्र आदि अपने आप में अलग विषय हैं और उनमें ज्ञान रचने का ढंग भी अलग–अलग है। विज्ञान के सभी हिस्सों में ज्ञान को स्वीकारने व उसकी जाँच की महत्वपूर्ण कसौटी प्रयोग करना है। किन्तु सामाजिक अध्ययन में यह अलग–अलग है। अतः प्रत्येक स्तर के लिए इन विषयों से ली विषयवस्तुओं के चुनाव में एक ऐसा संतुलन रखना होगा ताकि बच्चों की सामाजिक विज्ञान पर समग्र समझ बन सके उसके जीवन के अनुभव उसमें शामिल हो सकें।

समाज में प्रायः विज्ञान को सामाजिक विज्ञान से ज्यादा महत्वपूर्ण माना जाता है, इसीलिए ध्यान रखने की ज़रूरत है कि सामाजिक अध्ययन, सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ को विश्लेषणात्मक रूप से समझने की तैयारी करवाता है और समाज

की विविधता को समझने की भी। यह सब वर्तमान परिस्थितियों में सामंजस्य स्थापित करने के लिए भी ज़रूरी है।

पर्यावरण अध्ययन के ढांचे में जानकारी, अवधारणाएं, कौशल एवं मूल्य सम्मिलित हैं और इनके संदर्भ में अधिक सक्षमता हासिल करने की अपेक्षा रहती है। इसके लिए जरूरी है कि बच्चों को विषय वस्तु में आगे बढ़ाने के लिए इनमें संतुलन आवश्यक है। सामाजिक अध्ययन सीखने में यह आवश्यक है कि बच्चे के पास कुछ बुनियादी सूचनाएं हों और उन्हें अवधारणाओं के साथ जोड़कर उनकी समझ बना सके। सामाजिक अध्ययन से सम्बन्धित कौशल और आदतों का विकास भी जरूरी है। ये आदतें व कौशल कुछ तो विज्ञान शिक्षण के साथ समान हैं और कुछ अलग। कुछ कौशल जो सामाजिक अध्ययन व विज्ञान में समान हैं, वे हैं– कार्य–कारण संबंध खोज पाना, तुलना कर पाना, तार्किकता, वर्गीकरण विश्लेषण के वक्त अमूर्त काल्पनिक छवियों को मानस में रख पाना, अवलोकन कर पाना आदि। जैसे विज्ञान में, पत्ती का बारीकी से अवलोकन कर उसकी बनावट, और आंतरिक संरचना, उसके रंग, प्रकार का पता लगाना। उसी प्रकार सामाजिक अध्ययन के अंतर्गत ईद के अवसर पर की जाने वाली धार्मिक क्रियाओं, विशेष तरह के कपड़ों, खाने को देखकर ईद के बारे में जानना। विज्ञान में, बीजों के अंकुरण, विभिन्न तरह की जड़ों की आपस में तुलना कर उनकी संरचना समझना। इसी तरह सामाजिक अध्ययन में अलग–अलग तरह की भौगोलिक स्थितियों की तुलना कर वहां की कृषि, खानपान को समझना।

इसी तरह सामाजिक अध्ययन में कुछ कौशल ऐसे हैं जो विज्ञान से अलग हैं जैसे– निरंतरता और बदलाव की प्रक्रिया को समझ पाना, अपने जीवन पर सामाजिक और राजनैतिक प्रक्रियाओं का असर देख पाना, सामाजिक हित में निर्णय की क्षमता का विकास, विश्लेषण और व्याख्या करना। हालांकि व्याख्या और विश्लेषण विज्ञान में भी होगा लेकिन वहां व्याख्या ज्यादा सटीक और सार्वभौम होगी जबकि सामाजिक अध्ययन में वह सामाजिक संदर्भ व व्यक्ति के नजरिये के अनुसार बदल भी सकती है।

सामाजिक अध्ययन में कुछ आदतों के विकास की भी बात की जाती है जैसे–विविधता में आपसी सम्मान, विश्वास, एक दूसरे पर निर्भरता, परिवर्तन के प्रति जागरूकता, संवेदनशीलता, समय परिस्थिति अनुसार वैयक्तिकता व सामूहिकता की आदत का विकास।

वास्तव में हम सार्थक सामाजिक अध्ययन शिक्षण की बात तब तक नहीं कर सकते, जब तक की हम उसकी प्रकृति, स्वरूप और शिक्षण शास्त्र को नहीं समझ लेते। अब तक हमने देखा कि एक ही विषय 'पर्यावरण' के दो हिस्से होते हुए भी विज्ञान और सामाजिक विज्ञान की प्रकृति फ़र्क तरह की है और इसीलिए इनका शिक्षण भी फ़र्क तरह से होना चाहिए। यह इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि दोनों में ज्ञान की जांच के तरीके और ज्ञान प्राप्ति के स्रोत अलग–अलग हैं। इसे हम दोनों विषयों से संबंधित एक–एक वाक्य लेकर समझ सकते हैं। 1. प्रकाश की गति ध्वनि की गति से तेज होती है। 2. चश्मा पहनने वाले ज्यादा होशियार होते हैं। यदि इन दोनों वाक्यों की सत्यता की जांच करनी हो तो क्या करना होगा। आकाश में जब बिजली चमकती है तो उसकी चमक पहले दिखाई देती है जबकि आवाज काफी देर बाद आती है। इस अवलोकन से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि प्रकाश की गति ध्वनि की गति से तेज़ होती है। इसी तरह पटाखे को जलाकर पता कर सकते हैं कि उसमें चमक पहले आती है और आवाज बाद में। दूसरे वाक्य के लिए हम कुछ चश्मा पहनने वाले लोगों का सर्वे करेंगे, उनसे बातचीत करेंगे उनकी उपलब्धियों के बारे में पता करेंगे। इस आधार पर हम निष्कर्ष निकालेंगे कि चश्मा पहनने वाले होशियार होते हैं या नहीं।

अब इन दोनों वाक्यों की जांच की कसौटी को ध्यान से देखें। विज्ञान में हमने अवलोकन किया, प्रयोग किया और उस आधार पर निष्कर्ष निकाला और हम कह सकते हैं कि यह अवलोकन व प्रयोग कोई भी करेगा तो उसे यही निष्कर्ष मिलेगा। सामाजिक अध्ययन के वाक्य में हमने एक सेंपल लेकर सर्वे किया और उस आधार पर एक निष्कर्ष निकाला लेकिन कोई दूसरा व्यक्ति इसी तरह का सेंपल लेकर सर्वे करेगा तो

उसका निष्कर्ष कुछ ओर भी हो सकता है। यानि कि विज्ञान व सामाजिक अध्ययन में जांच के तरीके फर्क–फर्क हैं और निष्कर्षों की प्रकृति भी भिन्न प्रकार की है। इसी प्रकार दोनों विषयों में ज्ञान प्राप्ति के स्रोत भी भिन्न–भिन्न हैं। विज्ञान में ज्ञान अवलोकनों, प्रयोगों द्वारा प्रकृति के साथ अंतःक्रिया से आता है, जबकि सामाजिक अध्ययन में ज्ञान प्राप्ति के स्रोत समाज के साथ अन्तःक्रिया, समाज की मान्यताएं और जीवनशैली है।

सामाजिक अध्ययन विषय के शिक्षण में एक बात सबसे ज्यादा रखने योग्य यह है कि सामाजिक अध्ययन की विषय वस्तु के संदर्भ में बच्चों के अनुभव अलग–अलग हैं। जैसे खान–पान के संबंध में, रीति–रिवाजों के संबंध में, पर्व–त्यौहारों के संबंध में, काम–धंधों के संबंध में, व्यक्तिगत जरूरतों के संबंध में। किसी बच्चे के लिए मुख्य भोजन रोटी और सब्जी होगा तो किसी के लिए दाल–भात या मछली–भात। किसी के लिए ईद ज्यादा महत्व रखती है तो किसी के लिए ओणम। अतः एक शिक्षक उन विविध अनुभवों को शिक्षण कार्य का हिस्सा बनाए, उन्हें कक्षा मे शामिल करें ताकि सभी बच्चे विषयवस्तु से अपना जुड़ाव बना पाएं और इसलिए भी ताकि इन विविधताओं को सीखने की सामग्री के रूप में इस्तेमाल किया जा सके।

प्राथमिक स्कूलों में सामाजिक विज्ञान

जब बच्ची पहली बार स्कूल आती है तो वह अपने साथ अपने परिवेश की समझ लाती है। वह अपने परिवार, रिश्तों, आस–पास के पेड़–पौधों, नदियों, मौसम, इमारतों, पक्षियों, रीति–रिवाजों, त्यौहारों, गीतों आदि के बारे में जानती है। अब सवाल यह है कि सामाजिक अध्ययन की कक्षा में बच्ची की इस पहले से प्राप्त समझ को ध्यान में रखते हुए आगे कैसे बढ़ा जाए? किस तरह की समझ बढ़ाने का काम किया जाए?

इसमें मुख्य रूप से तीन हिस्से हैं। पहला, बच्ची के अपने अनुभवों को व्यापक धारणाओं से जोड़ना। वह अपने आसपास जो कुछ देखती है, महसूस करती है उनसे एक धारणा बनाती है। कक्षाकक्ष में आने के बाद यह जरूरी होता है कि उसे व्यापक व अमूर्त धारणा से जोड़ा जाए जैसे वह अपने परिवार व नाना के बारे में जानती है। अब इससे उसे परिवार व नाना की अवधारणा तक ले जाना है। दूसरा, खुद के अनुभवों के अतिरिक्त नई बातों व नई जगहों के बारे में जानना जैसे अपने घर के अतिरिक्त और किस–किस तरह के घर होते हैं, कैसे–कैसे शहर हैं, वहां कैसे–कैसे लोग हैं, कौन–कौन से काम–धंधे हैं, किस तरह का खानपान है, जिसे वह नहीं जानती है। स्कूल वह जगह है, जहां आकर वह अपने ज्ञान व जानकारी के संसार को और बड़ा करती है। तीसरा हिस्सा है, वह अपने आसपास को और ध्यान से देख पाए, उनको व्यवस्थित कर आपस में उनके संबंध ढूंढ पाएं, उसकी अवलोकन क्षमता ज्यादा सुदृढ हो पाए ताकि वह अपने आसपास को बारीकी से देखकर उसका अपने जीवन से जुड़ाव देख पाए। वह समझ पाए कि जिस प्रकार की भौगोलिक स्थिति में वह रहती है, जिस प्रकार के त्यौहार–पर्व उसके यहां मनाए जाते हैं, जिस तरह के काम धंधे उसके यहां किए जाते हैं उन सबका आपस में क्या संबंध है और उनका उसके जीवन पर क्या असर है।

इसी से जुड़ी एक बात यह भी महत्वपूर्ण है कि सामाजिक अध्ययन में अवधारणों के निर्माण में जानकारी की आवश्यकता होती है। पृथ्वी के धरातल और उससे जुड़ी बातों पर समझ बनाने के लिए हमें अलग–अलग जगहों की भौगोलिक स्थिति को जानना होता है, बाजार को समझने के लिए अलग–अलग तरह के बाजारों की जानकारी प्राप्त करनी होती है। लेकिन सामाजिक अध्ययन शिक्षण के दौरान यह ध्यान देना आवश्यक है कि जानकारी, अवधारणा निर्माण का एक अंग जरूर है परंतु जानकारी अपने आप में महत्वपूर्ण नहीं है। अतः जानकारी रटने पर जोर नहीं होना चाहिए।

बच्चों के मानसिक स्तर से विषयवस्तु का तालमेल

बच्चों का सामाजिक अध्ययन से परिचय करवाते समय हमें यह ध्यान में रखना होगा कि हम जो विषयवस्तु चुनें वह बच्चों के स्तर के अनुरूप हों, जैसे कक्षा चार में बच्चों को अक्षांश देशान्तर बताये जाते हैं, परन्तु इस समय तक बच्चे पृथ्वी के

गोलाकार रूप को भी नहीं समझ पाते। उनके मन में लगातार यह प्रश्न बना रहता है कि अगर पृथ्वी गोल है तो वह हमें दिखाई क्यों नही देती और दिखाई ना भी दे तो हम इस पर सीधे कैसे रहते हैं? इसलिए कक्षा में जो भी घटित हो, वह ऐसा हो, जिसे बच्चे अपने अनुभवों से जोड़ते हुए समझ पाएं। अत्यधिक अमूर्तिकरण यदि है तो उससे बचना होगा और बच्चें के जो ठोस अनुभव है उनसे शुरूआत कर अवधारणा की ओर बढना होगा। जैसे हम बच्चों के साथ कुछ प्रश्नों को उनके अनुभवों से जोड़ते हुए शुरूआत कर सकते हैं कि आप कहां रहते हैं? बच्चों का जवाब होगा 'घर' फिर हम कह सकते हैं कि अच्छा तो बताओ –चिड़िया कहां रहती है? इस सवाल से उनकी जानकारी को टटोलते हुए बात करते हुए हमें उसके स्तर को जानना होगा और जिसका इस्तेमाल करते हुए हम आगे की ओर बढ़ सकते हैं।

अतः हमें विषयवस्तु के चुनाव में बच्चों के स्तर को ध्यान में रखने के साथ–साथ उनके प्रस्तुतिकरण की योजना भी ऐसे बनानी होगी कि हम शुरूआत प्रश्नों, बातचीत या गतिविधि या किसी ऐसे माध्यम से करें जहां उन्हें अपने अनुभव व्यक्त करने, अपनी अवधारणाओं में तार्किक सम्बन्ध खोजने और निष्कर्ष निकालने के भरपूर मौके मिलें।

सामाजिक विज्ञान में भूगोल, इतिहास, नागरिकशास्त्र और अर्थशास्त्र का समावेश

सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत समाज के विविध सरोकर आते हैं क्योंकि इसमें इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र शामिल हैं। ये सभी सरोकार समाज से सम्बन्धित हैं और किसी न किसी रूप में सामाजिक स्थिति बतलाते हैं परन्तु फिर भी इनमे बुनियादी फ़र्क हैं।

भूगोल हमारे आस–पास की वे तमाम घटनाएं है, जिसमे हम इंसान एवं उसके परिवेश के सम्बन्धों को अनुभव कर सकें। प्राथमिक स्तर पर भूगोल बच्चों को प्राकृतिक पर्यावरण की छानबीन, तलाश व अवलोकन करने का अवसर देता है। इसके द्वारा बच्चों को अलग–अलग प्रदेशों में रहने वाले लोगों के जीवन के प्रति समझ विकसित करने का मौका मिलता है। साथ ही बच्चा प्रकृति और मनुष्य के सम्बन्धों को नज़दीक से जान पाता है इसके द्वारा उसमें अवलोकन, नक्शा व ग्राफ, चित्र व तालिकाओं को बनाने व पढ़ने के कौशल भी विकसित किए जा सकते हैं। जरूरत है कि बच्चों के सामने सटीक प्रस्तुतिकरण की ताकि वे इन्हें अपने अनुभवों द्वारा जोड़ पाएं। इस प्रकार भूगोल का उद्देश्य बच्चों को मूलभूत भौगोलिक अनुभव प्रदान करना तथा उनमें ऐसे हुनर विकसित करना, जिनसे वे आगे जाकर जटिल भौगोलिक अवधारणाओं को तथा मनुष्य के पर्यावरण के साथ सम्बन्धों को समझ पाएं और नक्शे एवं उसकी भाषा से परिचित हों। जैसे, दिन और रात कैसे होते हैं? इसकी शुरूआत करने के लिए हम बच्चों से पूछ सकते हैं कि बच्चों बताओ तुम क्या–क्या करते हो? जब बच्चे बताएं कि हम खाते, पीते, पढ़ते, खेलते और सोते हैं तो पूछा जा सकता है कि अच्छा तुम सोते कब हो? अमूमन बच्चों का जवाब होगा रात में। इस क्रम में बात की जा सकती है कि रात क्या होती है, कब होती है? फिर एक सरल प्रयोग द्वारा यह बताया जा सकता है कि पृथ्वी के जिस हिस्से पर रोशनी पड़ती है वहां दिन और दूसरे हिस्से में रात होती है तथा फिर पृथ्वी के घूर्णन गति की बात बतलायी जा सकती है। इस प्रकार प्राथमिक स्तर पर दिशाएं, मौसम, ऋतुएं, कीट–पक्षी और पशु, चट्टाने, मिट्टी और पानी चांद, सूरज और तारे, तथा नक्शा आदि प्रमुख अवधारणाएं है जो बच्चों के साथ नज़दीकी से जुड़ी हैं और वे इन्हें समझने की क्षमता रखते हैं।

इतिहास सामाजिक विज्ञान का महत्वपूर्ण भाग हैं। इसका उद्देश्य इतिहास की जानकारी मात्र देना नहीं है, बल्कि बच्चों को ऐतिहासिक दृष्टिकोण के महत्वपूर्ण पहलुओं से परिचित करवाना हैं, ताकि वे सामाजिक प्रक्रिया में निरन्तरता और बदलाव का,कार्य कारण सम्बन्ध को और इसमें समय की भूमिका को समझ सकें। इतिहास उन्हें समाज की अलग–अलग प्रक्रिया के परस्पर सम्बन्ध एवं उनके कारण खोजने का अवसर देता हैं। यह हमारे जीवन पर बीते समय की प्रक्रियाओं के असर को पहचानने में हमारी मदद करता हैं, साथ ही यह भी समझाता हैं कि विशेष सन्दर्भों में व्यक्ति की भूमिका भिन्न–भिन्न हो सकती हैं। बच्चों में इतिहास शिक्षण की शुरूआत कुछ ऐसी गतिविधियों के द्वारा कर

सकते हैं, जिनको करना बच्चों को चुनौतिपूर्ण लगे जैसे हम बच्चों से कह सकते हैं कि आप कुछ ऐसे सिक्के या नोटों को ढूढों जो कि आज प्रचलन में नहीं हैं या फिर हम भी बच्चों को पुराने सिक्के देकर कह सकते हैं कि बताओ इन सिक्कों या नोटों से तुम उस समय के बारे में क्या पता कर सकते हो? उन्हें यह टास्क दिया जा सकता है कि और किन–किन स्रोतों के द्वारा इसके बारे में पता लगा सकते हैं। इस गतिविधि के द्वारा बच्चे अपने स्रोतों को स्वयं खोजने का प्रयास करेंगे तथा इससे उनको बीते समय की जानकारी के स्रोतों और तरीकों को जानने और समझने का मौका मिलेगा ताकि वे इतिहास के सन्दर्भ मे अपना मत बना पाएं।

नागरिक शास्त्र का जुड़ाव नागरिक के महत्व के साथ जुड़ा हैं, जिसमें जनतांत्रिक ढांचे में हर नागरिक के शासन और प्रशासन से सम्बन्ध को समझना बहुत जरूरी हैं क्योंकि वर्तमान में व्यक्ति के जीवन में शासन की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो गई हैं। अतः नागरिक शास्त्र का उद्देश्य विभिन्न पदों व तंत्रों के गठन व अधिकार क्षेत्रों के नीरस वर्णन देने के बजाय बच्चों को प्रशासनिक ढांचों के नियमों, उनकी कार्य प्रणाली को देखने, समझने तथा उनकी अच्छी–बुरी वास्तविकता से रूबरू करवाना हैं। जिससे कि बच्चों में शासन–प्रशासन की इकाइयों की मूलभूत अवधारणाओं एवं कार्य प्रणाली की समझ विकसित हो सके। हमारा मानना है कि जब तक छोटी–छोटी सामान्य धारणाएं जड़ से स्पष्ट नहीं बनती, तब तक सम्पूर्ण ढांचों की बातें बच्चों के लिए हवा में लटकी रहती हैं। इसके लिए महज़ सूचना देने के बजाय पंचायत, नगरपालिका, स्थनीय न्याय आदि को घटनाओं, कहानियों, किस्सों व पात्रों के माध्यम से पेश किया जा सकता हैं, परन्तु यह अधिक उचित है कि इनके माध्यम से किताबी व आदर्श स्थितियों का सतही चित्रण करने के बजाय ढांचों की वास्तविक कमियों–कठिनाइयों को उभारा जाए। क्योंकि आम धारणा यह है कि आदर्शों, नियमों व ढांचागत व्यवस्थाओं के बोझ से एक बुद्धिजीवी और सक्रिय नागरिक का दृष्टिकोण विकसित नहीं होता।

नागरिक शास्त्र के समान ही अर्थशास्त्र में भी अर्थव्यवस्था के ढांचों की कुछ मूलभूत अवधारणाओं की समझ विकसित होनी चाहिए। अर्थशास्त्र के अन्तर्गत आमतौर पर सरकारी विकास नीतियों का ब्यौरा और उसकी समस्याओं का मोटा–मोटा खाका प्रस्तुत किया जाता है, जबकि जरूरत है कि हम शासन की आर्थिक नीतियों की पृष्ठभूमि उनके प्रभावों और विकल्पों को समझें। जैसे हम कक्षा में बच्चों से उनके स्थानीय बाजार के बारे में बात कर सकते हैं, उनसे बाजार का रोल प्ले करने को कह सकते हैं, जिसमें कुछ बच्चे दुकानदार और कुछ खरीददार की भूमिका अदा करें। इस प्रकार वे क्रय–विक्रय, विनिमय आदि प्रक्रियाओं को नज़दीकी से देख पाएंगे और समझ पाएंगे कि किस प्रकार बाजार विकसित होता है। गतिविधि के रूप में बच्चों को बैंक, पोस्ट ऑफिस आदि का भ्रमण करवाते हुए वहां की प्रक्रियाएं समझायी जा सकती है, जिससे अर्थशास्त्र में उनकी रूचि पैदा हो। वास्तव में अर्थशास्त्र मे बाजार, मुद्रा, उत्पादन, मांग, उद्योग और मूल्य जैसी अमूर्त अवधारणाओं को ठोस व रोचक उदाहरणों के द्वारा व्यक्त करने की जरूरत है, जिससे बच्चा खुद को विषय से जुड़ा हुआ पाए।

कामिनी और पुष्पराज सिंह : विद्या भवन शिक्षा संदर्भ केन्द्र में कार्यरत हैं।